तौरेतो-इंजील

की

सेहत

तौरेतो-इंजील

की

सेहत

बख़्तुल्लाह ख़ान

tauret-o-injīl kī sehat

The Trustworthiness of Tauret and Injil

by Bakhtullah Khan
(Urdu—Hindi script)

© 2017 Chashma Media
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

अज़ीज़ क़ारी! मग़रिबी ममालिक में बहुत-सी बातें क़ाबिले-मज़म्मत हैं। लोग मग़रिब से आनेवाली फिल्में देखते हुए कानों को हाथ लगाकर कहते हैं कि अल्लाह हमें ऐसी चीज़ों से बचाए रखे। इसके अलावा टीवी मग़रिबी क़ौमों का ऐसा तर्ज़े-ज़िंदगी दिखाता रहता है जिस पर किसी क़िस्म की कोई पाबंदी नहीं और जो सरासर ख़ुदग़रज़ी और अना-परस्ती का इज़हार है। अख़लाक़ी अक़दार बिलकुल ढीली ढाली हैं। इस तरह लोगों के ज़हन में यह बात बैठ गई है कि मग़रिब अख़लाक़ी और दीनी लिहाज़ से तनज़्ज़ुल का शिकार और ज़वालपज़ीर है। तब ख़तरा है कि यह नापसंदीदा अनासिर ईसाई ईमान की पैदावार समझे जाएँ। लेकिन ऐसा ख़याल बड़ी बेइनसाफ़ी का हामिल है। अगर इसलामी ममालिक में पाई जानेवाली मुआशरती बुराइयों को इसलाम के मुतरादिफ़ क़रार दे दिया जाए तो वैसी ही बेइनसाफ़ी होगी।

तो फिर हम किस तरह फ़ैसला कर सकते हैं कि हक़ीक़ी और सच्चा ईसाई ईमान क्या है? क्या कोई कसौटी, कोई मेयार है जो हमें यह फ़ैसला करने में मदद दे सके?

1

कलाम :
सच्चे ईमान की कसौटी

ज़रा तसव्वुर करें कि चारों तरफ़ तारीकी छाई हुई है। इस तारीकी में एक अलाव रोशन है। अलाव की झुलसा देनेवाली तेज़ गरमी के बाइस कोई नज़दीक जाने की जुर्रत नहीं करता कि मबादा जल जाए। थोड़ी थोड़ी देर बाद अलाव से चिंगारियाँ उड़ती हैं। उड़कर आग से दूर दूर पहुँचती और तारीकी में रोशनी फैलाती हैं। फिर ज़मीन पर आ गिरती हैं। कभी कभी वह सूखी घास या सूखे झाड़-

झंकाड़ पर जा गिरती हैं तो उन में आग भड़क उठती है। फिर एक और आग या अलाव जलने लगता है।

तौरात और इंजीले-शरीफ़ गोया इन्हीं चिंगारियों का रिकार्ड हैं जो अल्लाह तआला की ज़ात की भड़कती हुई पाकीज़गी से सादिर हुईं। वह सतहे-ज़मीन पर आ गिरीं और ख़ुदा के पैग़ाम-रसानों के दिलों में जलने लगीं। इस तजरबे से वह सख़्त हैरतज़दा हुए। इनके दिल और दिमाग़ छलक उठे और उनकी ज़बानें खुल गईं ताकि उस पैग़ाम का एलान करें जो उनको मिला है। पाक नविश्ते ऐसे ही इलाही मुकाशफ़ात पर मुश्तमिल हैं।

चुनाँचे सिर्फ़ तौरेत और इंजीले-शरीफ़ की तालीमात ही फ़ैसला कर सकती हैं कि हक़ीक़ी ईसाई ईमान क्या है। आइए एक मिसाल पर ग़ौर करें। फ़र्ज़ करें कि एक आदमी ख़ुद को ईसाई कहता है। वह चोरी करते हुए पकड़ा जाता है। क्या इस बात से ईसाई दीन को ग़लत ठहराना मुनासिब होगा? हरगिज़ नहीं! सिर्फ़ उस शख़्स का अपना ईमान ग़लत ठहरेगा, क्योंकि तौरात तो वाज़िह तौर पर फ़रमाती है कि चोरी करना मना है।

2

कलाम की तहरीफ़ नामुमकिन

तौरात और इंजीले-शरीफ़ की सेहत के ख़िलाफ़ उमूमन दो एतराज़ात पेश किए जाते हैं। एक तो कहा जाता है कि इस में तहरीफ़ यानी रद्दो-बदल हुआ है। ऐसे लोगों के नज़दीक अहले-किताब ने असल तालीमात छुपाने के लिए अपने नविश्तों को तोड़-मरोड़कर पेश किया है। दूसरे, इस ख़याल का इज़हार किया जाता है कि क़ुराने-मजीद ने इंजीले-शरीफ़ को मनसूख़ कर दिया है।

तहरीफ़े-लफ़्ज़ी का इलज़ाम शुरू से नहीं लगाया गया

अगर तहरीफ़ कोई मुस्तनद दलील होती तो इसलाम के शुरू ही से इसका वसी पैमाने पर ज़िक्र होता। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि तहरीफ़े-लफ़्ज़ी के वाज़िह इलज़ामात उन किताबों में ही मिलते हैं जो 1000 ई. के बाद ही लिखी गईं।

नवीं सदी के तीन नामवर मुसन्निफ़ीन से ईसाई मज़हब के ख़िलाफ़ किताबें क़लमबंद हुईं यानी अली बिन रब्बन अत-तबरी,[1] अल-क़ासिम बिन इब्राहीम अल-हसनी[2] और अमर बिन बहर उल-जाहिज़[3] से। लेकिन तीनों सिर्फ़ तहरीफ़े-मानवी का ज़िक्र करते हैं। तहरीफ़े-मानवी से क्या मुराद है? इससे वह फ़रमाना चाहते थे कि मतन के मानों को बदल दिया गया यानी मतन को ग़लत रंग में पेश किया गया है। याद रहे कि इनकी किताबें ईसाइयों के दावों को झुटलाने के लिए लिखी गई हैं। दूसरे मुसन्निफ़ीन पर भी यही बात

[1] किताबुद-दीन वद-दौला
[2] अर-रद अलान-नसारा
[3] रिसाला फ़िर-रद अलान-नसारा

सादिक़ आती है। कोई नहीं तहरीफ़े-लफ़्ज़ी का इलज़ाम लगाता है।[1]

तहरीफ़े-लफ़्ज़ी के बारे में पहला वाज़िह हवाला 1000 ई. के बाद के मुसलिम मुसन्निफ़ीन की तहरीरों में ही मिलता है। उनका मशहूर नुमाइंदा अंदलुस का इब्न हज़्म है।[2] तहरीफ़े-लफ़्ज़ी से क्या मुराद है? इस में फ़र्ज़ कर लिया जाता है कि न सिर्फ़ मतलब बल्कि मतन भी बिगाड़ा गया है।

हासिले-कलाम

आमदे-इसलाम के चार सौ साल बाद ही लोग तौरात और इंजीले-शरीफ़ पर तहरीफ़े-लफ़्ज़ी का इलज़ाम लगाने लगे। मुराद यह है कि अपने सुनहरी दौर में मुसलमानों ने ईसाइयों पर यह इलज़ाम न लगाया। तो क्या यह जायज़ है कि मौजूदा ज़माने में यह एतराज़ उठाया जाए?

[1] मसलन अल-अंबारी, अल-मातुरीदी, हसन बिन ऐयूब, अल-बाक़िलानी, अल-हमज़ानी वग़ैरा।

[2] किताबुल-फ़िसल फ़िल-मिलल वल-अहवा वन-निहल

लातादाद क़दीम क़लमी नुसख़ों का इत्तफ़ाक़

एक आम ख़याल यह है कि चूँकि बाज़ मक़ामात पर पाक नविश्तों के मुख़तलिफ़ मसौदों में क़दरे इख़्तिलाफ़ात नज़र आते हैं इसलिए ज़ाहिर है कि अहले-किताब ने तौरेत और इंजीले-शरीफ़ के मतन में दस्तअंदाज़ी की है।

लेकिन ज़रा सोच लें। यह नुसख़े कई ममालिक में बिखरे पड़े थे। कौन इन सबको तबदील कर सकता था? नीज़, तौरात और इंजीले-शरीफ़ के हज़ारों क़दीम मसौदों पर बड़ी अर्क़-रेज़ी, बारीकबीनी और एहतियात से तहक़ीक़ की गई है। इस तहक़ीक़ का नतीजा यह निकला है कि इन मसौदों की अकसरियत बिलकुल क़ाबिले-एतमाद है। इन में इख़्तिलाफ़ात निहायत मामूली नौईयत के हैं। इसके अलावा इन मसौदों का बड़ी एहतियात से मुक़ाबला करने से उलमा किताबत की इन मामूली ग़लतियों को बहुत हद तक दूर करने के क़ाबिल हो गए हैं। बाक़ी जो रह गई हैं वह इतनी मामूली हैं कि तौरेत और इंजीले-शरीफ़ की तालीमात पर बिलकुल असरअंदाज़ नहीं हो सकतीं। इसलिए उनको नज़रंदाज़ किया जा सकता है।[1]

[1] देखिए सेहते-कुतुबे-मुक़द्दसा सफ़हा 30-44।

नाक़ाबिले-मोतबर नक़्क़ादों की आरा नामंज़ूर

यह आम रिवाज हो गया है कि आज़ादख़याल ईसाई उलमा की आरा को तहरीफ़ के सबूत के तौर पर पेश किया जाए। दलील यह दी जाती है कि जब ईसाई उलमा भी कहते हैं कि कलाम के मतन में ग़लतियाँ और तज़ादात मौजूद हैं तो इससे यह हक़ीक़त ज़ाहिर होती है कि इस में रद्दो-बदल हो गया है। लेकिन बुनियादी सतह पर यह दलील बहुत आसानी से रद्द हो जाती है। यह तो ऐसे ही है जैसे कोई ग़ैरमुसलिम सलमान रुशदी या किसी आज़ादख़याल मुस्लमान मुसन्निफ़ के हवाले से कहे कि इससे साबित होता है कि क़ुराने-शरीफ़ में तहरीफ़ हो चुकी है।

कलाम में इसलामी तालीम कहीं मौजूद नहीं

तहरीफ़ के इलज़ाम के पीछे क्या ख़याल है? ख़याल यह है कि यहूदियों और ईसाइयों ने जान-बूझकर मुक़द्दस मतन को बदल डाला ताकि इसलाम की उन तालीमात को छुपा दिया जाए जो शुरू से कलाम के अंदर मौजूद थीं। मोतरिज़ीन का कहना है कि अहले-किताब सिर्फ़ तहरीफ़ करके ही अपनी ग़लत तालीमात को क़ायम

रख सकते थे। दूसरे लफ़्ज़ों में तहरीफ़ के नज़रिए का मक़सद यह है कि कलाम को ग़ैरमोतबर ठहराकर इस दावे के लिए रास्ता खोल दे कि असल मतन में इसलामी तालीमात पाई जाती थीं। हाँ, कुछ का दावा है कि आज तक पाक नविश्तों में इसलामी जौहर या मग़ज़ छुपा हुआ है मसलन कलिमा, इसलाम की आमद के बारे में पेशगोइयाँ वग़ैरा।

लेकिन अगर ग़ौर से देखा जाए तो मालूम होता है कि इसलामी तालीमात का जौहर या मग़ज़ कलाम में कहीं से अख़ज़ नहीं होता। यह ऐसा ही है कि मग़ज़ की तलाश में प्याज़ को छीलते जाएँ। उसे काटते जाएँ और छीलते जाएँ तो मग़ज़ की सूरत में क्या मिलता है? कुछ भी नहीं! इसके बरअक्स कलाम की तालीमात एक कुल पर मुश्तमिल हैं जिसे तक़सीम नहीं किया जा सकता और जिसका इसलामी तालीमात से कोई ताल्लुक़ नहीं। अगरचे चंद एक निकात में सतही मुशाबहत ज़रूर नज़र आती है।

मिसाल के तौर पर अल-मसीह की तसलीब ही को लीजिए। मग़रिबी मुअर्रिख़ीन में से कड़ी से कड़ी तंक़ीद करनेवाला भी अल-मसीह की मसलूबियत से इनकार नहीं करता। इंजीले-शरीफ़ में तसलीब के बारे में बकसरत हवाले मौजूद हैं जो कि बहुत वाज़िह हैं। चूँकि यह हवाले कलाम के मुख़तलिफ़ नविश्तों में मिलते हैं जो मुख़तलिफ़ अफ़राद ने मुख़तलिफ़ औक़ात में लिखे, इसलिए

सबके सब हवालों को इतनी उम्दगी से तबदील करना मुमकिन ही न था कि उन में कहीं कोई तज़ाद बाक़ी न रहे।

कई दफ़ा दावा किया जाता है कि पाक नविश्तों ने इसलाम की आमद की पेशगोइयाँ की हैं। लेकिन आज तक यह बात साबित नहीं की जा सकी। जब भी सियाक़ो-सिबाक़ का मुतालआ किया जाता है तो पता चलता है कि यह पेशगोई किसी और शख़्स या वाक़िये के बारे में है। मसलन दावा किया जाता है कि यूहन्ना 16:12-15 पैग़ंबरे-इसलाम की पेशख़बरी है। लेकिन अगर इन आयात के सियाक़ो-सिबाक़ का बग़ौर जायज़ा लिया जाए तो वाज़िह हो जाता है कि यह रूहुल-क़ुद्स के आने का बयान करती हैं।[1]

अल-मसीह ख़ुद कलामे-ख़ुदा है

यूहन्ना रसूल फ़रमाते हैं,

> कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइश-पज़ीर हुआ। (यूहन्ना 1:14)

इस आयत का क्या मतलब है? कलाम भला कैसे इनसान बन सकता है? कलाम तो कलाम ही होता है। मुमकिन है यह आला

[1] मुलाहज़ा फ़रमाएँ फ़ारक़लीत अज़ विकलिफ़ ए. सिंह।

दर्जे का नविश्ता हो जिस में इलाही ख़यालात क़लमबंद हों। हो सकता है यह दुनिया का बेहतरीन कलाम हो। लेकिन रहेगा कलाम ही—एक बेजान चीज़। चुनाँचे कलाम जानदार शै भला कैसे बन सकता है?

सियाक़ो-सिबाक़ पढ़ने से पता चलता है कि कलाम से मुराद ईसा अल-मसीह है। यानी अल-मसीह में ख़ुदा का अज़ली कलाम इनसान बन गया। इसे समझने में कुछ उलझन पैदा हो सकती है, और क्यों न हो? जब इनसान अल्लाह की ज़ात के भेद का खोज लगाने लगता है तो उसका ना-तवाँ दिमाग़ चकराने लगता है। इस तसव्वुर को बेहतर तौर से समझने के लिए आइए हम एक मिसाल पर तवज्जुह दें।

एक बीज अपने आप में बेजान दिखाई देता है। लेकिन बीज के अंदर पौदे की तमाम सिफ़ात मौजूद हैं। जब हम उसे ज़रख़ेज़ ज़मीन में बो देते हैं तो क्या होता है? शुरू में तो लगता है जैसे कुछ नहीं हो रहा। फिर आहिस्ता आहिस्ता बीज की शक्लो-सूरत बदलती है। एक कोंपल फूट निकलती है जो धूप की तरफ़ बढ़ना शुरू कर देती है। जड़ें बढ़ने लगती हैं जो मिट्टी से नमी और ख़ुराक खींचती हैं। बिलआख़िर बीज दिखाई भी नहीं देता बल्कि एक सरसब्ज़ो-शादाब पौदा आँखों को फ़रहत पहुँचाने लगता है। उस पर फूल आते हैं और फिर उसका लज़ीज़ फल देखकर मुँह में पानी भर आता है। बीज तो मर गया मगर उसके वसीले से ज़िंदगी की

एक हैरतअंगेज़ शक्ल पैदा हो गई। जो चीज़ किसी वक़्त बेजान दिखाई देती थी अब उसकी अपनी असल माहियत अमली तौर से दिखाई देने लगी है।

कलामे-ख़ुदा यानी अल-मसीह किस तरह इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइश-पज़ीर हुआ? बीज की तरह वह ज़मीन की तारीकी में लगाया गया और उसके साथ एक हो गया। मरकर उसने नई ज़िंदगी पैदा की यानी वह अबदी ज़िंदगी जिसे हर वह शख़्स हासिल करता है जो अल-मसीह पर ईमान ले आता है। अल-मसीह के बारे में पाक नविश्तों की दर्जे-ज़ैल इबारत का यही मतलब है,

> वह जो अल्लाह की सूरत पर था नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना कोई ऐसी चीज़ है जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की ज़रूरत है। नहीं, उसने अपने आपको इससे महरूम करके ग़ुलाम की सूरत अपनाई और इनसानों की मानिंद बन गया। शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया। उसने अपने आपको पस्त कर दिया और मौत तक ताबे रहा, बल्कि सलीबी मौत तक।
> (फ़िलिप्पियों 2:6-8)

कलामे-ख़ुदा ने अल-मसीह में इनसानी ज़ात के साथ एक होकर मौत की सलतनत में दाख़िल होने का तारीक और दर्दनाक सफ़र शुरू कर दिया। कलामे-ख़ुदा का इलाही बीज इनसान की तारीक और फ़ानी ज़मीन में दबा दिया गया यहाँ तक कि उसने सलीब पर जान दे दी। क्या यही अख़ीर या ख़ातमा था? ज़ाहिरी तौर से तो ज़रूर। लेकिन मौत की सलतनत के अंदर ज़िंदगी देने का अमल पहले ही शुरू किया जा चुका था। मरकर बीज ने नई ज़िंदगी पैदा कर दी। यह नई ज़िंदगी गुनाह में गिरे हुए इनसान की कमज़ोर ज़िंदगी से बिलकुल फ़रक़ है, क्योंकि उसका मसदर अल्लाह ही है। यह ज़िंदगी दायमी ज़िंदगी के चश्मे से हमेशा जारी रहती है। यह ज़िंदगी हर उस शख़्स को अता होती है जो अपनी ज़िंदगी अल-मसीह के सुपुरद कर देता है।

इससे हम तौरेत और इंजीले-शरीफ़ की माहियत के बारे में क्या नतीजा अख़ज़ कर सकते हैं? अगर अल-मसीह फ़िल-हक़ीक़त ख़ुदा का कलाम है तो पाक नविश्तों का किरदार क्या है? क्या वह भी अल्लाह से नाज़िल हुए हैं? उनकी क्या अहमियत है?

पाक नविश्ते कलामे-ख़दा की गवाही देते हैं

पाक नविश्तों की अहमियत इस में है कि यह कलामे-ख़ुदा यानी अल-मसीह की गवाही देते हैं। इनका वाहिद मक़सद ज़ुल्म से भरी हुई दुनिया में अल्लाह की नजात की गवाही देना है जैसा कि पौलुस रसूल अपने शागिर्द तीमुथियुस से फ़रमाता है,

> और आप बचपन से मुक़द्दस सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह का यह कलाम आपको वह हिकमत अता कर सकता है जो मसीह ईसा पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती है। क्योंकि हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।
> (2 तीमुथियुस 3:15-17)

पाक साहाइफ़ का मुकाशफ़ा एक नाक़ाबिले-यक़ीन मोजिज़ा है, क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ ने इस में भी अपने आपको पस्त किया।

उसने अपने इलाही ख़यालात नबियों के ज़हनों में डाले, और यों उनका बयान महदूद इनसान की ज़बान और मुहावरे में होने दिया। हाँ, अल्लाह तआला ने कमज़ोर इनसानों के अलफ़ाज़ को इस्तेमाल किया। इस तरह वह कई सदियों से अपने लोगों की राहनुमाई और अपनी मरज़ी उन पर ज़ाहिर कर रहा है।

हम पाक नविश्तों को एक ख़ूबसूरत तस्वीर से तशबीह दे सकते हैं। जब हम उस पर निगाह डालते हैं तो बहुत-सी पेचीदा और ख़ूबसूरत तफ़ासील देख सकते हैं। इन तफ़ासील में हमें कई बार कोई ख़ास मफ़हूम दिखाई नहीं देता। लेकिन जब इन तफ़ासील को एक साथ देखते हैं तो हमें कलामे-ख़ुदा अल-मसीह की लासानी सूरत नज़र आती है।

3

तौरेतो-इंजील की तनसीख़ नामुमकिन

अकसर कहा जाता है कि जिस तरह इंजीले-शरीफ़ ने तौरेत को मनसूख़ किया है उसी तरह क़ुराने-मजीद ने इंजीले-मुक़द्दस को मनसूख़ कर दिया है। लेकिन तनसीख़ के क़वायद की रू से सिर्फ़ अहकाम ही एक दूसरे को मनसूख़ कर सकते हैं। इस उसूल के मुताबिक़ कलाम में मज़कूर मक़ूले, वाक़ियात और नज़में मनसूख़ नहीं हो सकतीं।

आइए इस दावे का जायज़ा लें कि आया क़ुरानी अहकाम ने इंजील के अहकाम को मनसूख़ कर दिया है कि नहीं।

मसीह से मूसवी शरियत मनसूख़ न हुआ

अल-मसीह पहाड़ी वाज़ में फ़रमाते हैं,

> यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ। मनसूख़ करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। जो इन सब-से छोटे अहकाम में से एक को भी मनसूख़ करे और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की बादशाही में सब-से छोटा क़रार दिया जाएगा। इसके मुक़ाबले में जो इन अहकाम पर अमल करके इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही में बड़ा क़रार दिया जाएगा। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी

> शरीअत के उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाख़िल होने के लायक़ नहीं। (मत्ती 5:17-20)

यहाँ साफ़ तौर पर फ़रामाया गया है कि इंजील और तौरात की इकाई है। इंजील के फ़रमान तौरात के फ़रमान मनसूख़ नहीं करते बल्कि अल-मसीह शरीअत की तकमील करने आया। यह किस तरह?

जो तक़ाज़े मूसवी शरीअत ने किए वह हज़रत ईसा ने पूरे किए। वही कामिल इनसान थे। उन में गुनाह पाया नहीं जाता था। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने अपनी जान क़ुरबानी के तौर पर पेश करने से अपने ऊपर वह सज़ा उठाई जिसे गुनाहगार इनसान को भुगतना था। इससे उन्होंने शरीअत की तकमील की।

लेकिन ईसाई तौरात के कई एक अहकाम पर अमल नहीं करते। यह क्यों?

मसीह में आरिज़ी अहकाम का इख़्तिताम

तौरेत के उन रुसूमाती और अदालती अहकाम पर अमल करने की ज़रूरत नहीं जिनका ताल्लुक़ ख़ास इसराईल से है। गो यह क़ायम हैं लेकिन उनका इतलाक़ इसराईल पर ही महदूद है।

अल्लाह ने यह बात निहायत चौंका देनेवाले अलफ़ाज़ में पतरस रसूल को समझाई,

> अगले दिन पतरस दोपहर तकरीबन बारह बजे दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक़्त कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर के क़रीब पहुँच गए थे। पतरस को भूक लगी और वह कुछ खाना चाहता था। जब उसके लिए खाना तैयार किया जा रहा था तो वह वज्द की हालत में आ गया। उसने देखा कि आसमान खुल गया है और एक चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चार कोनों से नीचे उतारी जा रही है। चादर में तमाम क़िस्म के जानवर हैं : चार पाँव रखनेवाले, रेंगनेवाले और परिंदे। फिर एक आवाज़ उससे मुख़ातिब हुई, "उठ, पतरस। कुछ ज़बह करके खा!"
>
> पतरस ने एतराज़ किया, "हरगिज़ नहीं ख़ुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।"
>
> लेकिन यह आवाज़ दुबारा उससे हमकलाम हुई, "जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक क़रार न दे।" यही कुछ तीन मरतबा हुआ, फिर

> चादर को अचानक आसमान पर वापस उठा लिया गया। (आमाल 10:9-16)

दर्जे-बाला हवाले में अल्लाह तआला पतरस रसूल को हर क़िस्म के वह जानवर खाने का हुक्म देता है जिनको तौरेत ने नापाक ठहराया है। बुनियादी तौर पर इस रोया का ताल्लुक़ नापाक जानवरों को खाने से न था, बल्कि ख़ास मक़सद यहूदियों और ग़ैरयहूदियों के बाहमी ताल्लुक़ को ज़ाहिर करना था। यहूदियों को हुक्म था कि ग़ैरक़ौमों से किसी क़िस्म की रिफ़ाक़त न रखें। चुनाँचे वह उनसे दूर रहते थे और उनके साथ खाना तक नहीं खाते थे। यह हुक्म ईसा अल-मसीह की आमद तक क़ायम रहा, क्योंकि हर वक़्त यह ख़तरा रहता था कि ग़ैरक़ौमों के साथ मेल-जोल के बाइस यहूदी अपना ईमान छोड़ बैठेंगे। अंबिया उन्हें बारहा इस ख़तरे से आगाह करते आए थे।

पतरस रसूल की रोया ने यह सब कुछ बदल डाला। अल-मसीह अपने शागिर्दों को साफ़ और वाज़िह हुक्म दे चुका था कि सारी दुनिया में जाकर अल्लाह का कलाम फैलाओ। यह रोया इस हुक्म की तसदीक़ करती है। चुनाँचे उसे देखते ही रसूल का पहला क़दम यह था कि जाकर एक ग़ैरयहूदी ख़ानदान को बपतिस्मा दे।

इस फ़रमान का एक अहम नतीजा यह निकला कि वह तमाम रुसूमाती अहकाम जो इसराईली क़ौम पर महदूद थे आरिज़ी साबित हुए। उन पर अमल करने की ज़रूरत न रही।

मुहब्बत का हुक्म नामनसूख़

ताहम तौरेत और इंजीले-शरीफ़ के अहकाम एक ग़ैरमुंक़सिम इकाई हैं जिसको कभी मनसूख़ नहीं किया जा सकता। यह इकाई तौरेत की दो मरकज़ी आयात में साफ़ नज़र आती है।

> रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना। (इस्तिसना 6:5)

> अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। (अहबार 19:18)

अब अहम बात यह है कि ईसा अल-मसीह ने ख़ुद इन आयात की मरकज़ियत की तसदीक़ की। एक दिन एक यहूदी आलम ने अल-मसीह से पूछा,

> “उस्ताद, शरीअत में सब-से बड़ा हुक्म कौन-सा है?”
>
> ईसा ने जवाब दिया, “‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ यह अव्वल और सब-से बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं।” (मत्ती 22:36-40)

यहाँ अल-मसीह ने अहकाम के बारे में एक अहम उसूल बयान किया है। तमाम अहकाम को ख़्वाह वह इंजील के हों ख़्वाह तौरेत के, इन दो अहकाम में समोया गया है कि ख़ुदा से और अपने हमजिंस इनसान से मुहब्बत रखो। दीगर तमाम अहकाम सानवी हैसियत के हामिल हैं और इन्हीं दो अहकाम से सादिर हुए हैं। तौरात के रुसूमाती अहकाम के पीछे भी यही दो अहकाम हैं। चूँकि मसीह के बाद उनकी ज़रूरत न रही इसलिए वह ईसाई की ज़िंदगी में कोई अहमियत नहीं रखते।

ज़रा तसव्वुर करें कि आम का एक बीज ज़मीन में बोया जाता है। बहुत जल्द एक सब्ज़ कोंपल निकलेगी। वह बढ़ती जाएगी।

उसकी शाख़ें निकलेंगी। फिर उस पर बौर आएगा और बिलआख़िर वह फल देने लगेगा। इसी तरह तौरेत और इंजील के सानवी अहकाम इन दो मरकज़ी अहकाम से निकले हैं। इन में बाज़ आरिज़ी हैं जो किसी ख़ास दौर तक महदूद थे, जैसा कि ग़ैरयहूदियों से मेल-जोल न रखने का मज़कूरा हुक्म या खाने-पीने की पाबंदियाँ। लेकिन मुहब्बत के यह दोनों हुक्म चूँकि पाक नविश्तों के जौहर का हिस्सा हैं इसलिए न तो बदल सकते हैं और न मनसूख़ ही हो सकते हैं। चुनाँचे पड़ोसी से मुहब्बत रखने के हुक्म के बारे में पौलुस रसूल फ़रमाता है कि

> किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़ है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत रखने का क़र्ज़। यह करते रहें क्योंकि जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे किए हैं। मसलन शरीअत में लिखा है, "क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, लालच न करना।" और दीगर जितने अहकाम हैं इस एक ही हुक्म में समाए हुए हैं कि "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।" जो किसी से मुहब्बत रखता है वह उससे ग़लत

> सुलूक नहीं करता। यों मुहब्बत शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे करती है। (रोमियों 13:8-10)

इसी तरह यूहन्ना रसूल याद दिलाता है कि मुहब्बत का हुक्म कोई नया हुक्म नहीं है,

> अज़ीज़ो, मैं आपको कोई नया हुक्म नहीं लिख रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आपको शुरू से मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैग़ाम है जो आपने सुन लिया है। (1 यूहन्ना 2:7)

> यही वह पैग़ाम है जो आपने शुरू से सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना है।
> (1 यूहन्ना 3:11)

ग़रज़ यही है पाक नविश्तों की शरीअत : अल्लाह और दीगर इनसान से मुहब्बत। और यही हुक्म ख़ुद अल-मसीह से तकमील तक पहुँच गया। इलाही मुहब्बत का जो पैग़ाम तौरेत और इंजीले-शरीफ़ में शुरू से आख़िर तक मिलता है वह अल-मसीह में उरूज तक पहुँच गया। अब हमारा फ़र्ज़ है कि मुहब्बत की इस राह पर चलें। किस तरह?

मुहब्बत की राह पर किस तरह चलना है?

बुनियादी तौर पर इस हुक्म का ताल्लुक़ ख़ुदा की ज़ात से है। इसका सरचश्मा उसी की ज़ात है। और चूँकि अल्लाह मुहब्बत है इस वजह से मुहब्बत का हुक्म कभी मनसूख़ नहीं हो सकता। चुनाँचे मुहब्बत के हुक्म के बाइस ईमानदार का फ़र्ज़ है कि बिला-लिहाज़े-मज़हब और नसल हर इनसान की मदद करे। बेशुमार ईसाई हस्पताल, सेहत और तरक़्क़ी के मनसूबे इस हक़ीक़त के गवाह हैं।

बेशक नेकी और अच्छाई की इस राह को समझना तो आसान है, मगर इस पर साबितक़दमी से चलना मुश्किल ही है। क्योंकि हर एक से मुहब्बत रखना इनसानी सरिश्त के ख़िलाफ़ है। इनसान इन दो हुक्मों को कैसे पूरा कर सकता है?

कलाम फ़रमाता है कि इनसान अपनी ताक़त से इस हुक्म को पूरा नहीं कर सकता, क्योंकि उसकी फ़ितरत गुनाहआलूद है। वह अज़-हद कोशिश के बावुजूद हमेशा नाकाम ही रहेगा। चुनाँचे पौलुस रसूल बड़े दुख से बयान करता है,

> जो नेक काम मैं करना चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता हूँ जो करना नहीं चाहता। अब अगर मैं वह काम करता हूँ जो मैं नहीं

> करना चाहता तो इसका मतलब है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे अंदर बसता है।
>
> हाँ, अपने बातिन में तो मैं ख़ुशी से अल्लाह की शरीअत को मानता हूँ। लेकिन मुझे अपने आज़ा में एक और तरह की शरीअत दिखाई देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी समझ की शरीअत के ख़िलाफ़ लड़कर मुझे गुनाह की शरीअत का क़ैदी बना देती है, उस शरीअत का जो मेरे आज़ा में मौजूद है। हाय, मेरी हालत कितनी बुरी है! मुझे इस बदन से जिसका अंजाम मौत है कौन छुड़ाएगा?
> (रोमियों 7:19-24)

इन अलफ़ाज़ में इस मायूसी का इज़हार है जो इनसान को शरीअत पूरी करने की कोशिश में पेश आती है। तो इस मसले का हल क्या है? पौलुस रसूल अगले जुमले में इसका हल पेश करता है,

> ख़ुदा का शुक्र है जो हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से यह काम करता है। (रोमियों 7:25)

रूहुल-क़ुद्स की मदद

शरीअत को पूरा करने में अल-मसीह किस तरह इनसान की मदद करता है? यूहन्ना रसूल बड़ी तफ़सील से इसकी विज़ाहत करता है :

> अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है और अल्लाह को जानता है। जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह को नहीं जानता, क्योंकि अल्लाह मुहब्बत है। इस में अल्लाह की मुहब्बत हमारे दरमियान ज़ाहिर हुई कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को दुनिया में भेज दिया ताकि हम उसके ज़रीए जिएँ। यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा दे। (यूहन्ना 4:7-10)

अल्लाह की मुहब्बत ही ईमानदार के आमाल की बुनियाद है। जिस तरह सरचश्मे के बग़ैर चश्मा ख़ुश्क हो जाता है इसी तरह ईमानदार की मुहब्बत ख़ुदा पर मुनहसिर होती है। यह बात ईसाई ईमान के

तीसरे भेद यानी रूहुल-क़ुद्स से मुंसलिक है। अल्लाह का रूह ईमानदार के दिल में दाख़िल होता है और उसे अंदर से तबदील करना शुरू कर देता है। वह उसको मुहब्बत से मामूर कर देता है।

यह नहीं कि अब ईमानदार कामिल बन गया है। इस दुनिया में तो जीते जी वह गुनाहगार ही रहता है। लेकिन रूहुल-क़ुद्स उसके दिल में काम करते हुए ख़ुदा की राह पर आगे बढ़ने में उसकी मदद करता है, उसी राह पर जो उसे फ़िरदौस तक पहुँचाती है।

रूहुल-क़ुद्स अल्लाह की ज़ात के भेद का एक जुज़ है। उसकी मारिफ़त अल्लाह इनसानों के दिलों में काम करता और उनको बदल देता है। उसके वसीले से ख़ुदा की मुहब्बत ईमानदारों के दिलों में उनडीली जाती है। उसके वसीले से आज भी अल्लाह तआला दुनिया में सरगरमे-अमल है।

तसलीस का भेद

यह तालीम कि अल्लाह सालूस है आलिमों के उलझे हुए ज़हनों से नहीं निकली बल्कि यह अल्लाह तआला के नजात के उस काम से वाज़िह हुआ है जो वह इस दुनिया में करता है। यह उस मुकाशफ़े के ऐन मुताबिक़ है जो उसने कलाम में अता किया है।

तसलीस का मतलब हरगिज़ यह नहीं कि तीन उक़नूम अलग अलग तीन ख़ुदा हैं, बल्कि इसका मतलब यह है कि क़ादिरे-मुतलक़ की एक ज़ात में तीन अलग अलग अक़ानीम हैं।

क्या यह बात नामुमकिन है? ज़रा ग़ौर करें कि कायनात में कितनी बातें मंतक़ी लिहाज़ से नामुमकिन हैं। आज तक सायंस पूरे तौर पर नहीं समझ सकती कि रोशनी क्या है। सायंसदान मुख़तलिफ़ मॉडलों की मदद से इसकी विज़हत करने की कोशिश करते हैं। लेकिन कोई मॉडल भी पूरे तौर पर वाज़िह नहीं कर सकता कि रोशनी का अमल क्यों और कैसे रूनुमा होता है। तो भी हर साहिबे-नज़र शख़्स रोशनी के असरात को देख सकता और उसे इन असरात का तजरबा होता है। रोशनी के वसीले से हम देख सकते हैं। तक़रीबन हर जानदार चीज़ को ज़िंदा रहने के लिए रोशनी की ज़रूरत होती है।

फ़र्ज़ करें कि किसी ने कभी रोशनी नहीं देखी। वह कहता है कि रोशनी मंतक़ी तौर पर मुमकिन ही नहीं, क्योंकि रोशनी के जो मॉडल सायंसदान इस्तेमाल करते हैं वह आपस में मुतज़ाद लगते हैं। इसके अलावा हम अभी तक रोशनी की माहियत पूरे तौर पर नहीं समझ सकते। क्या इस तंक़ीद करनेवाले की दलीलें यह साबित करती हैं कि रोशनी का कोई वुजूद नहीं? हरगिज़ नहीं! जिसने रोशनी का तजरबा किया है वह उसकी दलीलों पर हँसेगा।

क़ादिरे-मुतलक़ की ज़ात पर इस बात का किस क़दर ज़्यादा इतलाक़ होता है। अल्लाह के बारे में बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनको हम कभी समझ नहीं पाएँगे। तसलीस की तालीम भी एक मॉडल है जिससे ज़मीन पर ख़ुदा की नजात की सरगरमियों की विज़हत करने की कोशिश की गई है। तसलीस का अक़ीदा अल्लाह के भेद की उसी क़दर विज़हत करता है जिस क़दर उसने ख़ुद को इनसान पर मुनकशिफ़ किया है।

लाज़िम है कि इनसान इस मुक़द्दस भेद के सामने सर झुकाए और शुक्रगुज़ारी और एहतरामो-अक़ीदत के साथ दिल को अल्लाह की तरफ़ उठाए जिसने अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कराने के लिए सब कुछ किया है।

अल-मसीह के वसीले से इनसान को नई ज़िंदगी मिलती है। अब वह अपने गुनाहों का क़ैदी नहीं रहता बल्कि ख़ुदा का फ़रज़ंद और फ़िरदौस का वारिस बन जाता है। इस हैसियत में वह अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश करता है। अब वह अपने जज़बात और अपनी ख़्वाहिशात का ग़ुलाम नहीं रहता बल्कि आज़ाद हो जाता है। ख़ुदा की शरीअत ही यानी मुहब्बत का हुक्म उसकी राहनुमा होती है। और वह रूहुल-क़ुद्स की मदद से इस शरीअत का इतलाक़ अपनी ज़िंदगी के हर शोबे पर करने को आज़ाद होता है। इसी वजह से सच्चे ईसाई को किसी ख़ास ज़ाबिताए-हयात की ज़रूरत नहीं रहती, क्योंकि वह अल्लाह की

मरज़ी पर चलने की कोशिश करता है, मगर ग़ुलाम की नहीं बल्कि फ़रज़ंद की हैसियत से।

कलाम मनसूख़ नहीं हो सकता

अब सवाल यह है कि क्या इसलामी अहकाम ने तौरात और इंजीले-शरीफ़ के अहकाम को मनसूख़ कर दिया है कि नहीं?

हम देख चुके हैं कि तौरात और इंजीले-मुक़द्दस के बुनियादी अहकाम ख़ुदा और दीगर इनसान से मुहब्बत हैं। इसके ज़िमन अख़लाक़ी अहकाम भी आते हैं। सिर्फ़ और सिर्फ़ इसराईल के रुसूमाती अहकाम आरिज़ी थे।अगर मैं ख़ुदा और दीगर इनसान से मुहब्बत रखूँ तो न दग़ाबाज़ी करूँगा, न ज़िना। मैं वह कुछ करने की सिर-तोड़ कोशिश करूँगा जो ख़ुदा और दीगर इनसान को पसंद हो। इस नाते से मुहब्बत का हुक्म सब-से सादा मगर सब-से मुश्किल हुक्म है। पहाड़ पर हमारे आक़ा के फ़रमान कितने दुशवार हैं (मत्ती 5-7)! मसलन

> तुमने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न करना।' लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत को बुरी ख़्वाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। अगर तेरी बाईं आँख तुझे

> गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फैंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही उज़ु जाता रहे। और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फैंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही उज़्व जाता रहे। (मत्ती 5:27-30)

यह हुक्म पहाड़ी वाज़ के दीगर अहकाम की तरह कभी मनसूख़ नहीं हो सकता, क्योंकि वह अख़लाक़ी अहकाम के ज़िमन आ जाता है। ग़ौर कीजिए कि हमारे आक़ा ने तौरात का यह हुक्म मनसूख़ न किया बल्कि उसे मज़ीद सख़्त कर दिया। दिल में ज़िना करने का ख़याल ही सज़ाए-मौत के लायक़ है।

सवाल यह है कि अगर यह इतना मुश्किल है तो क्या कोई कामयाब हो सकता है? पूरे तौर पर तो नहीं। लेकिन जिस तरह फ़रमाँबरदार बेटा अपने बाप की मरज़ी पूरी करने की कोशिश करता है इसी तरह ईसा का पैरोकार रूहुल-क़ुद्स की मदद से कोशिश करता है कि अपने आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करे। बेटे को किसी लंबे-चौड़े ज़ाबिताए-अख़लाक़ की ज़रूरत नहीं होती। अपने बाप के साथ गहरे और मज़बूत ताल्लुक़ के बाइस वह अपने दिल की गहराइयों में उसकी मरज़ी को जानता है। हिज़क़ियेल नबी

की क़दीम नबुव्वत का यही मतलब है। ख़ुदा ने उसकी मारिफ़त फ़रमाया,

> तब मैं तुमहें नया दिल बख़्शकर तुम में नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। क्योंकि मैं अपना ही रूह तुम में डालकर तुम्हें इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको।
> (हिज़क़ियेल 36:26-27)

ज़रा तसव्वुर करें कि एक घर में एक आदमी और उसका नौकर क़ियामपज़ीर हैं। जब मालिक को सफ़र पर जाना है तो क्या करेगा? वह नौकर को वाज़िह अहकाम देगा कि उसे क्या क्या करना है। मसलन कि बाग़ीचे को वक़्त पर पानी देना है, कुत्ते को इतना खाना डालना है, बिल अदा करने हैं वग़ैरा। तसव्वुर करें कि यही काम वह अब अपने बेटे को बताता है। वह बेटे से भी वही बातें कहेगा, मगर फ़रक़ क्या होगा? अगर बेटे के साथ एतमाद और मुहब्बत का रिश्ता हो तो उसकी आवाज़ और लहजे में फ़रक़ होगा। उसके हाथों और चेहरे के इशारे फ़रक़ होंगे। वह अपने बेटे को हुक्म नहीं देगा बल्कि मुहब्बत से नसीहत करेगा। वह जानता है कि मेरा बेटा मेरी हिदायात पर अमल करेगा, क्योंकि

जो कुछ मेरा है वह मेरे बेटे का भी है। उसे अपने बेटे की निगरानी के लिए किसी को मुक़र्रर करने की ज़रूरत नहीं कि देखे कि कोई ग़लत काम तो नहीं कर रहा। यह हैसियत है पक्के ईसाई की। वह शरीअत के बंधनों से आज़ाद होकर दिल से अल्लाह की मरज़ी पर चलना चाहता है। इस वजह से ईसाई नुक़्ताए-नज़र से इंजील के अहकाम की मनसूख़ीवाली बात बेमानी है, क्योंकि इलाही मुहब्बत की दायमी शरीअत की मनसूख़ी तो हो ही नहीं सकती।

अल-मसीह ने एक बार फ़रमाया,

> किसी आदमी के दो बेटे थे। इन में से छोटे ने बाप से कहा, 'ऐ बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।' इस पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तक़सीम कर दी। थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-दराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। सब कुछ ज़ाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज दिया। वहाँ वह अपना पेट उन फलियों

से भरने की शदीद ख़्वाहिश रखता था जो सुअर खाते थे, लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली।

फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, मेरे बाप के कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने मज़दूरों में रख लें।' फिर वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।' लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और पाँव में जूते पहना दो। फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और

> ख़ुशी मनाएँ, क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब
> ज़िंदा हो गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।'
> इस पर वह ख़ुशी मनाने लगे। (लूक़ा 15:11-24)

यह है ईसाई ईमान का पैग़ाम। पैग़ाम यह नहीं कि किसी नए या बेहतर मजमुआए-अहकाम की पैरवी करो। यह इस आज़ादी और ख़ुशी का पैग़ाम है कि अल्लाह बाप ने मुझे क़बूल कर लिया और अपनी बाहों में ले लिया है। यह है हक़ीक़ी आज़ादी। यह है हक़ीक़ी तकमीले-आरज़ू। काश अज़ीज़ क़ारी को भी इसका तजरबा हो!